

DPN 5794

Title : भगवत्पा कीलक BHAGAVATYĀ KĪLAKA

Run. No. 6485

Cat. No.

Micro. No.

Subject Hymn ~~काव्य~~ काव्य

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 20.5 x 7.5 Folios 4 Lines (in a page) 8/9

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuja. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

0

cms.

5

10

15

20

15

10

5

0

Cms.

5

10

15

20

25



ववस्किगा, मालाधनी ललाटय, रुवौ नकशगमिनी ॥ ^{भवि} ^य गिनगायक वासिनी, यमदयावनासिक ॥ सीखनी यक्षधाम
 (धसागयाधनवासिनी) कथाली काविकायके, कधूसलंगुसकिनी, नासिकायासंगन्ध, य, उक्तनीधनवचिका, अथ
 नयासृगकला, जिघांवायिसनसुती, दन्तानकेगुकी मानी, कधूमधनुवाणुका, दण्डिकाविणयव, मुहामायावगाल
 के, कामायाविवकीरके, वार्यमसद्वसंगला, गीवायारुदकालीय, पृथ्वीसधनदुनी, नीलगीवावहिकुण, नलिकान
 लकावनी, स्वधधनिगुकी सुन्धी, वाक्मभवज, ^{रुसेव} ^{गुनी} नके, दम्बिकावरिलीरुथ, नखानधूलसुनीय
 क, कूकोनकतनधनी, सुनीयकेमहादवी, मर्तुसाकविनासिनी, दधयललिगादवी, गूदलसूलधनीनी, तारि
 वकामिनीनरु, दुर्दुर्गुधसुनीगथा, मरुवनकेदुर्गन्ध, कधारिगवतीगथा, रुतधनीमकयुगे, मन्ममभववारुनी
 । ऊधमहावलायाका, जानूयुग्मविनायकी, गुलुथानीयसिहिव, यादपृथ्वीवगजसी ॥ यादगुली ४ गीधनीम

ल, ४ कृष्णाधुनवायय ४, नखानितनकणीकस्य, कवययद्विदिस्तिर्ग, मानान्नतिरुवेडाक, रुजावृद्धि ४ यविरुव
 त, यसावृद्धिरुवत्यु ४ कीर्तिवृद्धिगुजायत, गसाऊयसदोरु, कवयकासदीमन, जयसफसतीयेली
 केवाकवयकासादित, ४ निर्विद्यनरुवसिद्धि, गुणीजयसमरुवा, यावदूमधुर्लधक, सगेलवनकानन, गावनि
 सुतिमदिन्या, सकनियुगधीगुकी, अयुगालरुगीयु, मरुथालिरुतसुच्य, रुमिगातुलरुगकामानु, रुवदु
 मयवायण, ४ वाद्यगसुलसगुर्ग, संगमभय, त ४, वक्रगाभिगीदियी, कवयवजसेनिरु, गिसर्थकीरु
 ययसु, संगकृत्यनमगति, दलोकयनमर्क, नयसुनयिदेलुर्, तन्यदिसुखमायाति, यावदाकगसिधुर्व, या
 यातियूनधानिर्य, मरुमायायरावत, ४ ॥ ७ ॥ ॥ छुतिगीसिवायुय, वायव्यविनविदिद्या ४ कवयसमाय ॥
 जयखदवीचामुण, जयरुगाकिहोविदि, ॥ ॥ जयसर्वगतदवी, कालनागिनमासुत, ॥ जयतीमंगला
 काली, रुदकालीकयालिनी, दूग्गकमासिवाधानी, वाहासुधनमासुत, ॥ मरुिषासुननित्रासि, विधाणिवनद

३८

नमः॥ नूर्यदहिय (नादहि) ऊर्यदहियद्विषाहि ॥ वन्दितादि युगद्वीद्विषो राग्यदायिनि ॥ नूर्यदहि ॥ मधुक
 वृकादिवा विधाणि वननमः॥ नूर्यदहि ॥ अविद्या नूर्यवनीत सर्वसिद्धि विनासिनि ॥ नूर्य ॥ सुखाविरुक्ति युक्त
 वा चण्डिकद्विषाहि ॥ नूर्य ॥ नतस्य सर्वद्वारुक्ता चण्डिकयाधिनसिनि नूर्य ॥ चण्डिकसगतिखा मध्वयनी
 रुक्मिणी ॥ नूर्य ॥ दहि सो राग्यमानो ग्य दहिद्वीयनसुख ॥ नूर्य ॥ विधादिद्विषाहिनासी विधाहियनमः॥ नूर्य ॥
 नूर्य ॥ सुनासुनासिना वलनिद्विषयन ॥ नूर्य ॥ विधावेन यसावर्क लक्ष्मीवर्कजनक ॥ नूर्य ॥ य
 वलुदेवदय्यद्वि चण्डिकयुगतायमे ॥ नूर्य ॥ रुक्मनस सुताद्वी संसुखल्लेखमनिक ॥ नूर्य ॥ वगुर्वकियु
 र्वका संसुतायनमध्वनी ॥ नूर्य ॥ हुं ह्या विपतिमुद्राव पूजितयनमध्वनी ॥ नूर्य ॥ द्वीयवपुदा दहिय देव
 दय्यविनासिनि ॥ नूर्य ॥ यत्नामनामनादहि मना वृत्तानसाविणी ॥ तावीदीद्वीससाव सागलस्यक लाहवा
 न ॥ हुं ह्या विपतिमुद्राव मलासगय ॥ नूर्य ॥ सगसककसंस्थाकी वनमाप्राप्ति संयद ॥ २० ॥ ॥ हुं ह्या

मन्त्र ७

ग्रैलासुति ॥ समाक ॥ ॥ विष्णुद्विषाहिनादहिय ॥ नूर्यदहियद्विषाहि ॥ नूर्यदहियद्विषाहि ॥ नूर्यदहियद्विषाहि ॥
 धाविने ॥ यवमगद्विनायसु मेकुणामकीलकै धी सा विरुममवाप्राप्ति सगतिजायतत्यन ॥ सिद्धिवाटना
 दीनी वसुनिसुकलान्यायि ॥ नतसुवताद्वी संसुखल्लेखमनिक ॥ नूर्य ॥ नूर्य ॥ नूर्य ॥ नूर्य ॥
 विनेतसिद्धिनेव सर्वसिद्धिनादिक ॥ स ॥ नूर्य ॥ नूर्य ॥ नूर्य ॥ नूर्य ॥
 मवमिद्वी ॥ नूर्य ॥ नूर्य ॥ नूर्य ॥ नूर्य ॥
 विरुममवाप्राप्ति सर्वमिवनससि ॥ रुक्मयामिचगुद्विषा मध्वमावा समाहित ॥ दनायिपतिपतिगु क्रातिना
 नैधेयासिद्धि ॥ हुं ह्या नूर्यवकीलेन मलादवनकिलि ॥ यानि ॥ किली विधायेनी निर्यजयति ससुता
 ससिद्धि ॥ सगलसायि गंधर्वजायतवन ॥ नूर्यवावाटकासुग नूर्यकायिनजायती ॥ नायमूर्यवस्यीति मृता

१. त्याकिल ४

भाकमवायूयात। क्लायायनरुक्वीत अकूर्वलाविनस्यति। गताक्लावसयन्न मिदयानरुक्वीत ४। सीराग्यादि
वयकिवि दृगेतललनाजन ४। तसर्वखलुसादन तनजायामिदवूधे ४। गतोसुंजायमानसि न सुगुक्रियाति
कानके। रुवखवसमगयि ताग ४। यानरुक्वीत ४। नेधुयखलुसादन सीराग्या नाग्यसयिद ४। सगुहानि ४। यनामी
कसुयगीसागुकिजन ४॥ हुंतिरुगवला ४। किलक ४। समाके ॥ ॥
ॐ नमगुलि काये ॥ गामूयोतिहिसहानाज गनययमेधुनी ॥ आनाधितासेवनृणां रागं सुप्रयवगृदा ॥
नाजावाव ॥ रुगवन्नवतानामी चलि काया सुधादिता ४। यतषायि कतिविक्रत यधनवकुमहसि ॥ आनाध
यनायादवा ४। सुसूर्यथनयद्विज। विधितायुहिसकली यथावलयगस्यम ॥ ॥ सविभूवाव ॥ हुं दीनरु
खियनमी अनाखीययवन्नत ॥ रुकासितिनमीविह वावाचननाधिया सर्वस्थाया मरालकी सिउनायनमध